जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 10 अंक 96 • मार्च, 2024
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

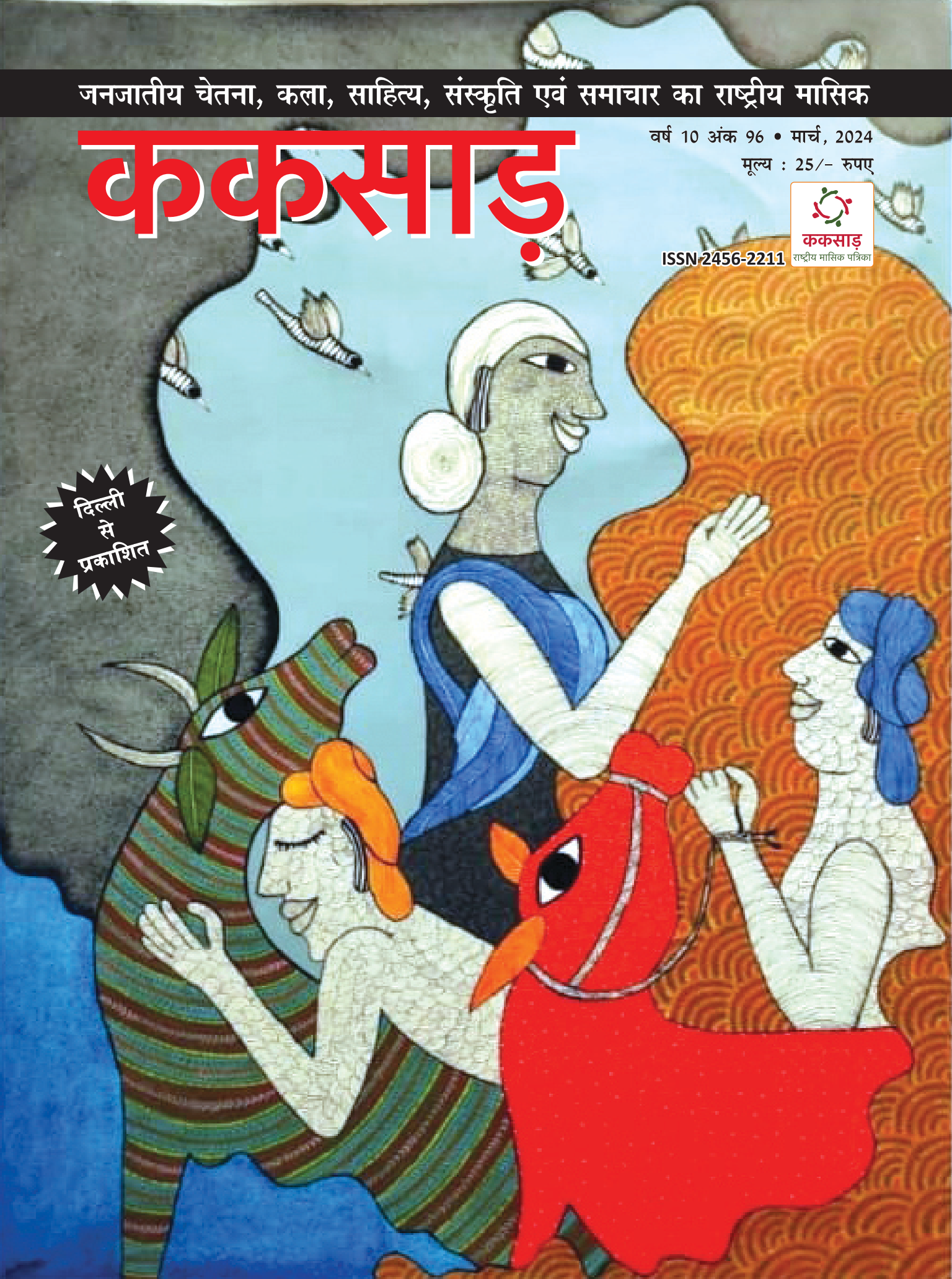

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

मार्च 2024 **वर्ष-10 • अंक-96**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक
दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।
• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

5. गोंड कला से ही हमारी पहचान है
(गोंड कलाकार **रोशनी श्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लेख

7. शांतिनिकेतन का वसंतोत्सव : **डॉ. रामचन्द्र राय**
9. रेणु की राजनीतिक चेतना : **मांगन मिश्र 'मार्त्तण्ड'**
14. हिमालय के शिखरों से प्रकृति रचना : **प्रो. श्रीराम परिहार**
18. प्रचलित परंपरा से लोक का अर्थ : **डुमन लाल ध्रुव**
20. हम भी धरती का श्रृंगार करें : **अंकुश्री**

शोधा-लेख

22. परिधि पर 'पारधी' भाषा : **योग्यता भार्गव**
25. भारत की आजादी के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य : **विकास कुमार यादव**

कहानी

29. बालकनी : **सोनाली प्रभा**
34. एक पहलू यह भी : **मूल : रविंदर सिंह सोढी, अनु : प्रो. नव संगीत सिंह**

कविता

39. कुलदीप सलिल 39. धर्मपाल महेंद्र जैन 40. अनिता रश्मि 40. पूजा गुप्ता

रिपोर्ट

41. विश्व पुस्तकीय महोत्सव 2024 : **कमलेश भट्ट कमल**

लघुकथा

28. मूक अंतरात्मा
17. **घोषणा-पत्र**
21. **यादें**

पुस्तक समीक्षा/पुस्तक चर्चा

45. चुने हुए शेर : **कुसुमलता सिंह**
48. द सौतार : **प्रो. ओम प्रकाश भारती**
8. **क्या है ककसाड़?**
49. **सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - रोशनी श्याम (गोंड कलाकार)
भूसे से दाना अलग करते हुए भूसे के उड़ते हुए रंग की चमक को अपनी कला में लाना
भोपाल (म.प्र.)
मो. 94155-51878

संपादकीय

सबसे पहले आप सभी को रास-रंग, फाग- भंग के त्यौहार होली की बधाई। आप सोच सकते हैं कि होली में तो अभी भी कुछ हफ्ते बचे हैं फिर अभी से ही भला होली की बधाई देने का क्या तुक है। तो इसका खुलासा आगे करते हैं। पेशे नजर है होली पर, किसानों की होली पर, किसान की कलम से, चंद लाइनें...

माटी चंदन बने गुलाल...
बदलते मौसम के नवरंग...
बारिशों की जबर पिचकारी...
चढ़ती धूप सी बढ़े उमंग,
बादलों पर बजते नगाड़े
फाग गायें प्रकृति के संग..
खून पसीने की बने ठंडाई,
जिसमें भाग्य भाँग की गोली,
सबसे प्यारी जग से न्यारी,
हम किसानों की होली।।

दरअसल होली की शुरुआत 'बसंत-पंचमी' से मानी जाती है, और सबसे पहले अबीर गुलाल इसी दिन उड़ाए जाते हैं। फाग तथा धमार गाने की धूम भी बसंत पंचमी से शुरू हो जाती है। होली के बाद भी रंग गुलाल का ये सिलसिला रंग-पंचमी तक चलता है। वैसे भी महीना फागुन का हो और होली की बात न चले तो कुछ अधूरा सा रह जाएगा।

हमारे यहाँ होली राष्ट्रीय पर्व कहलाता है। इसे भारत के विभिन्न प्रांतों तथा सांस्कृतिक अंचलों में अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यहाँ तक कि राजा-रंक, अभिजात्य वर्ग-इतर वर्ग, गरीब -अमीर सभी इस त्यौहार को समान भाव से मनाते हैं। यह इकलौता त्यौहार है जो अमीर-गरीब, छोटे-बड़े सभी को समान धरातल पर ले आता है। बहुरंगी कपड़ों और रंगेपुते चेहरे सभी एक जैसे लगने लगते हैं। कुछ समय के लिए ही सही पूरा समाज समतामूलक लगने लगता है। सच तो यह है कि पूरे भारत की मानसिकता एक है और यदि थोड़ा भी सौहार्द कहीं बचा हुआ है, तो वह लोक-संस्कृति, पर्व-त्यौहारों में ही सबसे ज्यादा प्रकट होता है। जनजातीय जन-जीवन की सामुहिकता आरण्यकी-संस्कृति की रीढ़ है। यही कारण है कि वे सब अलग-अलग रह कर भी अपने सभी त्योहारों को अनिवार्य सामुहिकता के साथ मनाते हैं।

आपका

डॉ. राजाराम त्रिपाठी
मो. 94252-58105

गोंड कला से ही हमारी पहचान है

(गोंड कलाकार **रोशनी श्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

रोशनी श्याम

पता– द्वारा मिथलेश कुमार श्याम, 18 सूरज नगर, वार्ड नम्बर 26,भदभदा रोड, हुजूर, भोपाल-462003 (म.प्र.)
मो. 94155-51878

परिचय– रोशनी श्याम ने 2008 से अपने आर्ट वर्क की शुरुआत की। इन्होंने अपने चाचा अपने गुरु कमलेश सिंह उइके से चित्र बनाना सीखा। वे कहती हैं कि जब उनके चाचा दीवार पर चित्र बनाते थे तो उनके हाथों को देखती थीं कि उनका हाथ कितनी बारीकी से चलता था। फिर उसी तरह वे भी बनाने की कोशिश करती थीं। जब उनके चाचा ने उनकी लगन देखी तो सबसे पहले उन्हें आकृतियों की आँख बनाना और फिर नाक बनाना सिखाया उसके बाद पूरा चेहरा कैसे बनाते हैं उसकी क्या विशेषताएँ होती हैं यह बताया। आगे वे बताती हैं कि जब वे धान काटने खेत में जाती थीं तो खेत की गीली मिट्टी से पुतला बनाती थीं। उसको सुखाकर उसे गोबर से पुताई करके फिर सफेद मिट्टी से पोत कर उसपर प्राकृतिक रंग करना चाचा सिखाते थे। चाचा को चिड़िया, पेड़ एंव स्त्री की आकृतियाँ बनाना अच्छा लगता था तो मैंने भी उसे सीखा। मेरे गाँव में जो सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं जैसे शैला नाच, कर्मा, ददरिया आदि तो मैं उसपर पेंटिंग बनाती थी और अब भी बनाती हूँ। मेरे चाचा ने मुझे नृत्य सिखाया, तरह-तरह के वाद्य बजाना सिखाया। बचपन में हमारे पास अच्छे कपड़े नहीं होते थे चप्पल नहीं होती थी तो पुराने कपड़े पर चाचा कोई पेंटिंग बना देते और रस्सी को पेंट करके चप्पल बना देते तो मैं खुशी से उसको पहन लेती थी। उन्होंने मुझे बारहवीं तक पढ़ाया। जब मैं ग्यारहवीं में थी तो मेरे चाचा ने कहा था कि जीवन में अपने दम पर जीना सीख लो अब तुम बड़ी हो गई हो। उसके कुछ दिनों बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। उसके बाद मैंने नृत्य से ज्यादा अपनी पेंटिंग पर ध्यान देना शुरू किया और प्रकृति से जुड़ी चीजों को अपनी पेंटिंग में ले आई। 2013 में मेरा विवाह मिथिलेश श्याम से हुआ और आज मैं एक बेटी दामिनी की माँ हूँ। प्रस्तुत है इनसे की गई बातचीत--

प्र. आप पेंटिंग के लिए विषयों का चुनाव कैसे करती हैं?

उ. हमारे यहाँ लोक कथाओं, लोक गीतों, देवी-देवताओं की पूजा, खेती करने की परंपरा है। हम अपनी पेंटिंग के लिए विषय भी उसमें से ही निकालते हैं।

प्र. आपके यहाँ हर चित्रकार यही कहता है पर आप गोंड कला में नयापन कैसे लाती हैं?

उ. सबका स्टाइल अलग-अलग होता है। जैसे हमारा है कि फसल कट कर जब घर आती है तो उसका दाना निकालने के लिए दवाँई की जाती है। उससे दाना अलग और और छिलका अलग हो जाता है। कभी सूप से कभी टोकनी से गिराते हुए और कभी पंखा लगा कर दाने को भूसे से अलग करते हैं। तो उस समय जो भूसा गिरता है उसकी छवि मेरे चित्रों में आती है। मैंने उसको ही अपनी विशेषता बनाई है।

प्र. अपने किसी एक चित्र के बारे में बताइए?

उ. जब हम कुछ देखते हैं या कोई कहानी सुनते हैं तो उसे चित्रों में रंगने की कोशिश करते हैं। जैसे एक बार मैं गर्मी के दिन में अपने खेत के किनारे जा रही थी। कहीं कोई छाँव

कुसुमलता सिंह
प्रबंध एवं परामर्श संपादक, ककसाड़
मो. 99682-88050